हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय
धर्मशाला (हिमाचल प्रदेश)

आज़ादी का अमृत महोत्सव

भारतीय पंथ मत सम्प्रदाय एवं सेमेटिक धर्म अध्ययन केन्द्र
एवं
समाजशास्त्र एवं सामाजिक नृविज्ञान विभाग

द्वारा आयोजित

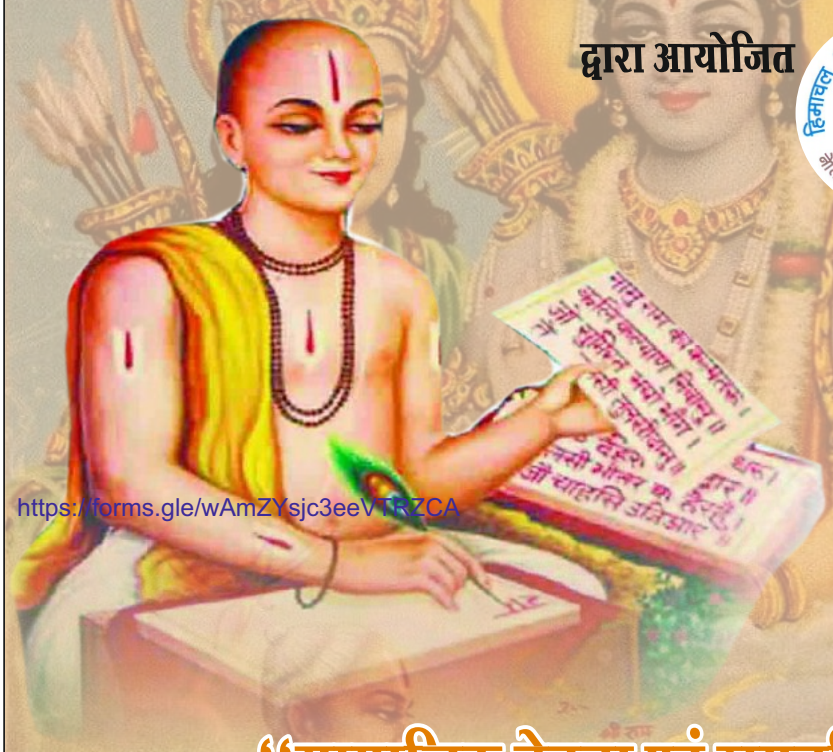

https://forms.gle/wAmZYsjc3eeVTRZCA

प्रो. सत प्रकाश बंसल
माननीय कुलपति
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विवि
(मुख्यसंरक्षक)

"सामाजिक चेतना एवं रामचरितमानस"

ज्येष्ठ शुक्ल १०, विक्रमी सम्वत् २०८० (दिनांक 30 मई 2023)

एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

(ऑनलाईन व ऑफलाईन)

स्थान: सप्त सिन्धु परिसर, देहरा - II

प्रो. प्रदीप कुमार
अधिष्ठाता, अकादमिक
(संरक्षक)

संयोजक
डॉ. गिरीश गौरव
9430445897
8210181930

सह संयोजक
डॉ. शबाव अहमद
9805091666
डॉ. प्रभात रंजन सेठी
9711074357
डॉ. मंगला ठाकुर
9459781924

भारतीय पंथ मत सम्प्रदाय एवं सेमेटिक धर्म अध्ययन केन्द्र
एवं
समाजशास्त्र एवं सामाजिक नृविज्ञान विभाग
सप्त सिन्धु परिसर, देहरा - II

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

संगोष्ठी के विषय में :-

सामाजिक चेतना एवं रामचरितमानस

सत संगत मुद मंगलमूला। सोई फल निधि सब साधन फूला।
बिनु सत संग विवेकन होई। राम कृपा बिनु सुलभन सोई॥

गोस्वामी तुलसी दास द्वारा रचित श्री राम चरित मानस केवल भक्ति मार्ग के साधकों का भाव ही पुष्ट नहीं करती वरन उनका आध्यात्मिक सामाजिक तथा व्यवहारिक जीवन का भी मार्ग दर्शन करती है। यह सम्पूर्ण व्यावहारिक जीवन के दर्शन को समेटे हुए एक ऐसा ग्रन्थ है जिसने हम संसारी जीवों के व्यक्तिगत पारिवारिक, सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन के विभिन्न अंगों के लिए आदर्श स्थापित किये हैं। जो आज के समय में भी उपयोगी हैं। यह ग्रंथमन वचन और कर्म की महत्ता को समझाता है और इससे व्यक्ति को एक सफल और धार्मिक जीवन जीने के लिए मार्गदर्शन मिलता है।यह भारतीय संस्कृति इतिहास और समाज के विभिन्न पक्षों के संदर्भ में भी जानकारी देता है। इसमें समझाया गया है कि कैसे धर्म एक संपूर्ण जीवन जीने के लिए महत्वपूर्ण है। वर्तमान समय में रामचरितमानस भारतीय संस्कृति और धर्म का अति महत्त्वपूर्ण अंग है एवं इस उपभोक्तावादी काल में इसकी प्रासङ्गिकता अत्यधिक बढ गई है।

समाज और व्यक्ति का परस्पर घनिष्ठ सम्बंध है। समाज ही व्यक्ति को सुसंस्कृत एवं सुसभ्य बनाता है। सामाजिक संगठन में प्रत्येक व्यक्ति अपने अपने वर्ण और आश्रम के अनुसार अपने-अपने धर्म का पालन करता आया है। भारतीय दर्शन में पुरूषार्थ की धारणा व्यक्ति को सर्वांग जीवन की ओर ले जाती है। वर्तमान काल के तनावयुक्त इस जीवन में रामचरितमानस की शिक्षाएं करुणा क्षमा और दूसरों के प्रति प्रेम के महत्व पर बल देती हैंऔर वे लोगों को जीवन के प्रति अधिक सकारात्मक और सहानु भूति पूर्ण दृष्टिकोण विकसित करने में मदद करती हैं।

रामचरित मानस व्यक्तियों को भारतीय संस्कृति की विविधताको अच्छे ढंग से समझने और उसकी प्रशंसा करने में मदद करता है, तथा सदियों से भारतीय समाज को आकार देने वाले मूल्यों और परंपराओं के प्रति गहरा सम्मान विकसित करता है।नैतिकता और करुणा पर इसकी शिक्षा व्यक्तियों को मार्गदर्शन और प्रेरणा प्रदान करती है क्योंकि वे आधुनिक जीवन की चुनौतियों का सामना करते हैं, और इसकी कहानियाँ और अंतर्दृष्टि व्यक्तियों को भारतीय संस्कृति और परंपरा की गहरी समझ विकसित करने में मदद करती हैं।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने स्वराज के बाद जिस सुराजरूपी रामराज कीकल्पना की थी वह तुलसीदास जी ने अपने मानस के उत्तरकाण्ड में रामराज्य कीविशिष्टताओं के साथ वर्णित किया है। नवजीवन पत्र में गांधी जी तुलसीमानस के बारे में बार बार लिखते रहते थे कि रामराज्य फिर स्थापित हो रामचरितमानस मात्र साढ़े चार शताब्दीयुगों से जनमानस में स्थापितवाल्मीकि रामायण से अधिक लोकप्रिय हो गई। तुलसीदास जीका मानस कलियुग के दोषों को नष्ट कर सबका मंगल करने वाला ही नहीं अपितुयह तो निरंतर बहने वाली वह निर्मल एवं पवित्र नदी है जिसमें रावणऔर शूर्पनखा जैसे चरित्रों का भी वर्णन है।

शाश्वत मूल चेतना शक्ति शील सौंदर्य के समन्वित प्रतीक राम में मर्यादा की स्थापना और उसके व्यावहारिक रूप पर दृढ़ता से टिकने की भावना रामचरितमानस में अभिव्यंजितहोती है। पारिवारिक सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन में मधुर आदर्श तथा उत्सर्ग की भावना इसमें सर्वत्र बिखरी पड़ी है। इस ग्रन्थ में निरूपित जीवन-व्यवस्था एक आदर्श समाज एवं आदर्श राज्यकी कोरी कल्पना मात्र न होकर पूर्णतः अनुभवगम्य और व्यावहारिक है। इसग्रन्थ के माध्यम से गोस्वामी जी ने परस्पर स्नेह-सम्मान के साथकर्त्तव्य-परायणता के माध्यम से न केवल जीवन को समृद्ध-सुखी बनाने में असंख्य-अप्रतिम योगदान दिया है अपितु मानस के पात्रों के माध्यम से ढेरों सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन में अभूतपूर्व कार्य किया है।राम के सम्पूर्ण जीवन के आर्दश को सामान्यजन तक पहुंचाने का उत्कृष्ट कार्य गोस्वामी तुलसीदास द्वारा किया गया जोकि संभवतः महर्षि वाल्मीकि जी नहीं कर सके। इसका स्पष्ट कारण है कि गोस्वामी तुलसीदास जी ने सामान्यजन की भाषा का उपयोग कर इसे जनसामान्य में पहुंचा दिया।

भारतीय पंथ मत सम्प्रदाय एवं सेमेटिक धर्म अध्ययन केन्द्र
एवं
समाजशास्त्र एवं सामाजिक नृविज्ञान विभाग

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना भारतीय संसद अधिनियम 2009 के अन्तर्गत की गई। प्राचीन भारतीय वैदिक संस्कृति के नैतिक मूल्यों को समाज में बनाए रखने हेतु केन्द्रीय विश्वविद्यालय हिमाचलप्रदेश द्वारा "भारतीय पंथ मत सम्प्रदाय एवं सेमेटिक धर्म अध्ययन केन्द्र" को अकादमिक स्तर पर 2020 में लाया गया। विगत 3 वर्षों से अकादमिक स्तर पर यह केन्द्र एक नई अकादमिक चेतना का उद्घोष कर रहा है। इस विभाग का उद्देश्य भारत के सांस्कृतिक, आध्यात्मिक एवं वैदिक मूल्यों को अकादमिक क्षेत्र के माध्यम से अकादमिक विमर्श में लाकर जनमानस तक पहुंचाना है।हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय के अन्तर्गत समाजशास्त्र एवं सामाजिक नृविज्ञान विभाग की स्थापना २०१५ में की गई। २०१५ से लगातार समाजशास्त्र एवं नृविज्ञान विभाग भारतीय समाज शास्त्र के सन्दर्भ में अनेकों मौलिक अनुसंधान एवं शैक्षणिक कार्य को सम्पादित करता आ रहा है। परिणामस्वरुप यह विभाग अपने अथक प्रयासों से समस्त भारत में समाजशास्त्र विषय में अपना एक स्थान बना लिया है।

पंजीकरण :

⇨ **नीचे दिए गए लिंक पर अपना पंजीकरण अवश्य करवाएं**
https://forms.gle/arHVPwNsXm8cBYFD6

⇨ **सभी प्रतिभागियों को ई प्रमाण पत्र दिए जाएंगे।**

⇨ **समय: प्रातः 9:30 बजे**

नोट : शोध सारांश पत्र आमंत्रित है।
शोध पत्रों का प्रस्तुतिकरण ऑनलाईन करवाया जाएगा।
पंजीकरण शुल्क छात्र/छात्रा 50 रु/-
शिक्षक शोधार्थी 100 रु/-
पंजीकरण शुल्क जमा करने के बाद रसीद ई-मेल पर भेज दें
hindustudiescuhp@gmail.com

Account No: 2062101009761
Account Holder Name- Central University of Himachal Pradesh
Bank & Branch- Canara Bank, Kotwali Bazar, Dharamshala
IFSC Code- CNRB0002062

उप-विषय :

(क) भारतीय समाज में संवाद की परंपरा
(ख) बदलते सामाजिक प्रतिमान एवं रामचरितमानस

कृप्या अपने शोधपत्र की सॉफ्ट कॉपी 28 मई 2023 तक अणुसंकेत (ईमेल) के माध्यम से नीचे दी गई मेल पर भेज दें।
hindustudiescuhp@gmail.com